

## ये जिनगी फेर चमक जाए

भगवती लाल सेन

### जीवन परिचय

छत्तीसगढ़ के लोकप्रिय कवि भगवती लाल सेन का जन्म 1930 में धमतरी जिले के देमार गाँव में हुआ था। उनकी कविताएँ किसान, मजदूर और उपेक्षित लोगों के बारे में हैं। सेन एक प्रगतिशील कवि थे, जिनकी कविताओं में आज के जीवन की विसंगतियों पर व्यंग्य प्रहार किए गए हैं और मानवीय अनुभूतियों के प्रति गहरी संवेदनशीलता भी दिखाई पड़ती है। उनकी छत्तीसगढ़ी रचनाओं में कविताओं के दो संकलन पहला-‘नदिया मरै पियास’ और दूसरा ‘देख रे आंखी, सुन रे कान’ प्रसिद्ध हैं। उनकी कविताएँ और उनके गीत एक सच्चे इन्सान की देन हैं जो न जाने कितने लोगों को सच्चाई जानने के लिए प्रेरित करती है। 51 वर्ष की अवस्था में इस जन पक्षधर कवि का 1981 में निधन हो गया।

कोठी म धान छलक जाए, ये जिनगी फेर चमक जाए।  
झन बैर भाव खेती म कर, मन के भुसभुस निकार फेंकौ

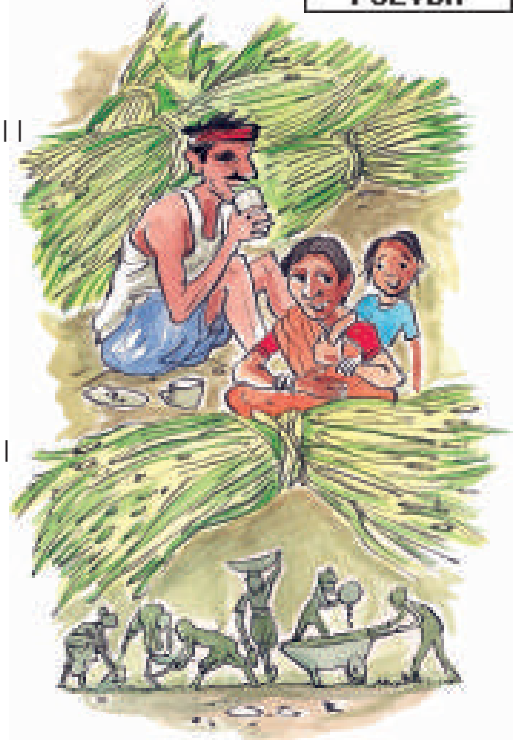
हाँसौ-गोटियावौ जुरमिल के, सुन्ता के रदा झन छेकौ।  
गोटियइया घलो ललक जाए, सुनवइया सबो गदक जाए।।1।।

जिनगी भर हे रोना-धोना, लिखे कपार लूना बोना।  
जाना है दुनिया ले सबला, काबर करथस जादू टोना।  
हुरहा मन मिले झझक जाए हँडिया कस भात फदक जाए।।2।।

मुँह घुघवा असन फुलोवौ झन, कोइली अस कुहकौ बगिया म  
चंदा अस मन सुरुज कस तन, जिनगी महके फुल बगिया म  
भेंटौ तो हाथ लपक जाए, गुँगुवावत मया भभक जाए।।3।।

भुइँया के पीरा ल समझौ धरती के हीरा ल समझौ  
काबर अगास ल नापत हौ, मीरा के पीरा ल समझौ  
कोरा के लाल ललक जाए, बिसरे मन मया छलक जाए।।4।।

जुग तोर बाट ल जोहत हे, पल छिन दिन माला पोंहत हे  
अमरित बन चुहे पसीना तोर, मेहनत दुनिया ल मोहत हे  
अँगना म खुसी ठमक जाए, सोनहा संसार दमक जाए,  
कोठी म धान छलक जाए, ये जिनगी फेर चमक जाए।।5।।



## शब्दार्थ

**कोठी** – धान रखने की कोठरी; **भुसभुस** – शंका; **गोटियाना** – बात करना; **गदक** – प्रसन्न; **कपार** – मस्तिष्क, मस्तक; **लूना** – फसल काटना; **झझक** – डरना; **हुरहा** – अचानक; **हंडिया** – हंडी; **घुघुवा** – उल्लू (पक्षी); **गुँगुवाना** – सुलगना; **भभकना** – एकाएक आग भड़कना; **पीरा** – दर्द; **बिसरे** – भूले; **बाट** – रास्ता; **जोहत** – प्रतीक्षा करना; **माला पोहना** – माला गूँथना; **अमरित** – अमृत।

## अभ्यास

## पाठ से

- 1 “कोठी म धान छलक जाए, ये जिनगी फेर चमक जाए।” पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
- 2 “मुँह घुघुवा असन फुलोवौ ज्ञन” ऐसा क्यों कहा गया है?
- 3 सुंता (सुमति) से रहने से क्या लाभ होता है? लिखिए।
- 4 बगिया में कोइली जैसा कुहकने के लिए क्यों कहा जा रहा है?
- 5 “गुँगुवावत मया भभक जाए” पंक्ति में खुलकर स्नेह प्रकट करने को कहा गया है।” इस कथन का क्या उद्देश्य है?
- 6 पसीने की अमृत से तुलना क्यों की गई है? समझाइए।

## पाठ से आगे

- 1 “जाना है दुनिया ले सबला” पंक्ति का भाव-विस्तार कीजिए।
- 2 “भुँइया के पीरा” से कवि का क्या आशय है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
- 3 “धरती के हीरा” से आप क्या समझते हैं? अपने विचार प्रकट कीजिए।
- 4 मेहनतकश को दुनिया क्यों पसंद करती है?
- 5 “काबर अगास ला नापत हौ” पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?
- 6 “जिनगी भर हे रोना धोना” आप इस कथन से सहमत या असहमत होने का तर्क प्रस्तुत कीजिए।

## भाषा के बारे में

1. पाठ में आए हुए छत्तीसगढ़ी की विभक्तियों एवं संबंध सूचक अव्ययों को छाँटकर लिखिए एवं उनका हिन्दी में भाषांतर कीजिए

उदाहरण— मं – में कस – जैसा



2. "चंदा अस मन सुरुज कस तन" में कौन सा अलंकार है? पहचान कर उसकी परिभाषा लिखिए।
3. मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार तिहारे आऊँ।  
हे पावन परमेश्वर मेरे मन ही मन शरमाऊँ।।

उपरोक्त भजन की पंक्तियों में मनुष्य इस संसार में आकर छल, प्रपंच, काम-क्रोध, लोभ, मोह में फँसकर अपनी काया के क्लुषित होने से जनित आत्म अपराध बोध के भाव से है। वह इस मैली काया के साथ ईश्वर के मंदिर में प्रवेश करने से स्वयं ही शर्मिंदा हो रहा है। इस तरह के भाव प्रायः शांत रस के अन्तर्गत देखे जा सकते हैं। कविता 'ये जिनगी फेर चमक जाए' में भी जीवन के प्रति असारता / निःसारता के भाव विद्यमान हैं।

- क. कविता पढ़कर उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिसमें ये भाव देखे जा सकते हैं।
- ख. इस कविता के अतिरिक्त शांत रस की अन्य कविताओं को भी ढूँढ़ कर लिखिए।
4. पूर्व में आपने अभिधा और लक्षणा शक्ति को पढ़ा एवं जाना है। अब निम्न वाक्य को ध्यान से पढ़िये – "सुबह के 8 बज गए हैं।"

इस वाक्य का प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न-भिन्न अर्थ होगा :-

**जैसे-** एक आदमी जो रात में पहरेदारी करता है उसकी छुट्टी के समय से है, कार्यालय जाने वाले व्यक्ति के लिए कार्यालय जाने की तैयारी से है, गृहिणी इसका अर्थ गृह कार्य से जोड़कर देखेगी, बच्चों के लिए इसका अर्थ विद्यालय जाने की तैयारी से है एवं पुजारी इसे पूजा-पाठ से जोड़कर देखेगा।

इस प्रकार जहाँ वाक्य तो साधारण होता है लेकिन उसका अर्थ प्रत्येक पाठक या श्रोता के लिए अलग-अलग या भिन्न-भिन्न होता है, इसे ही व्यंजना शक्ति कहते हैं एवं इससे उत्पन्न भाव को व्यंग्यार्थ कहा जाता है।

### योग्यता विस्तार

1. फसल कटाई के दौरान कृषक की दिनचर्या का वर्णन कीजिए।
2. कृषि एवं कृषक जीवन से संबंधित कोई अन्य कविता का संकलन कीजिए।
3. हिन्दी साहित्य में नौ रस माने गए हैं। यथा-शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भूत, शांत। यद्यपि प्राचीन रस सिद्धांत में 'वात्सल्य' की गणना रसों के अन्तर्गत नहीं की गई है, किन्तु सूरदास के पश्चात् इसे भी रस माना गया। इस प्रकार अब रसों की संख्या बढ़कर दस हो गई है।

शिक्षक की सहायता से सभी रसों के उदाहरणों को ढूँढ़कर पढ़िए एवं समझने का प्रयास कीजिए।

